प्रसार फोल्डर 03/2015

खरीफ मूँगफली की खेती : समस्यायें एवं समाधान

भाकृअनुप - मूँगफली अनुसंधान निदेशालय
पो. बो. 5, इवनगर रोड, जूनागढ – 362 001

हरनारायण मीना, नवीन कुमार जैन, रणजीत सिंह यादव एवं राधाकृष्णन टी.

खरीफ मूँगफली की उन्नत खेती : समस्यायें एवं समाधान

कब और क्या करें ?	कैसे करें ?	क्या न करें ?	क्यों न करें ?
खेत की प्रारंभिक तैयारी			
• अप्रैल-मई के महीने में जमीन की तैयारी करें। • तीन साल में एक बार चिकनी काली या भारी कठोर मिट्टी में चिजलिंग या गहरी जुताई करें ताकि वर्षा का पानी संग्रहित हो सके।	• खेत में सभी ढेलों को तोडनें के लिए एक गहरी जुताई एवं दो–तीन बार हैरो या कल्टीवेटर चलाएं। • ग्रीष्मकाल में गहरी जुताई (20-30 सेमी) करें जिससे मृदा का सौरीकरण (सोलेराईजेशन) होने से कीट, रोग जनित जीवाणु एवं खरपतवार का प्रकोप कम हो जाता है।	• गीली मिट्टी में जुताई कभी न करें। • उथली एवं हल्की जमीन में गहरी जुताई न करें।	• खेत में बड़े-बड़े ढ़ेले बन जायेगें। • अधिक जुताई करने से जल व वायु भू-क्षरण से मृदा की उर्वरा–शक्ति कम हो जाती है।
किस्मो का चयन			
• अधिक उत्पादन वाली किस्मों का चयन करें। • कीट, बीमारी एवं पानी की कमी से लड़ने की क्षमता वाली किस्मों का चयन करें।	• फसल की परिपक्वता अवधि के अनुसार किस्मों का चयन करें। • 100-115 दिन में गुच्छे वाली एवं120-140 दिन में फैलने वाली किस्में पक जाती है।	• यदि वर्षा कम हो और सिंचाई की सुविधा नहीं हो तो देर से पकने वाली किस्मों का चयन ही करें।	• देर से पकने वाली किस्मों को उचित नमी नहीं मिलने के कारण पैदावार कम होती है।
बीज का चुनाव			
• मध्यम आकार एवं अंकुरण क्षमता अनुसार उच्च गुणात्मक बीजों का चयन करें। • अनुवंशिकी रूप से शुद्ध बीज से अंकुरण और स्वस्थ्य पौधों का प्रतिशत ज्यादा रहता है।	• हमेशा प्रमाणित बीज का ही उपयोग करें। • बुवाई के लिए बीज फलियों से एक सप्ताह पहलें ही निकालें। • किसान अपने खेत से दूसरी किस्म के पौधों को उखाड़ फेकें और प्राप्त बीजों को शुष्क एवं ठंडे स्थान में संग्रहित करें एवं अगले वर्ष बुवाई के काम में ले।	• ज्यादा पुराना बीज काम में न लें। • ज्यादा या कम परिपक्व, टूटा, संक्रमित बीज का उपयोग न करें। • विभिन्न किस्मों को एक साथ अथवा पास-पास न उगायें।	• अंकुरण क्षमता कम हो जाती है। • अंकुरण कम होने से पैदावार घट जाती है। • किस्मों की गुणवत्ता बनाये रखने में कठिनाई आती है।

बीजोपचार

- बीज जनित बीमारियों से सुरक्षा एवं आर्थिक लाभ हेतु बीजोपचार करना अति आवश्यक है।
- फफूँद नाशक से उपचारित करें।
- राईजोबियम, पीजीपीआर, फॉस्फोरस घुलनशील सूक्ष्मजीव जैसे जैव उर्वरकों से उपचारित करें।
- मेंकोजेब (3-4 ग्राम/किलो) या कार्बेन्डाजिम (2 ग्राम/किलो) से बीज को उपचारित करें।
- 10 ग्राम/किलो बीज को ट्राईकोडरमा विरिडी और स्यूडोमोनास फ्लोरीसेन्स से उपचारित करें।
- राईजोबियम कल्चर और फॉस्फोरस घुलनशील सूक्ष्मजीव का प्रयोग 600 ग्राम/है की दर से करें।
- ऊपर दी गई फफूंदनाशक की मात्रा का खास ध्यान रखें।
- फफूँद नाशक के उपचार के तुरन्त बाद बुवाई न करें।
- राईजोबियम कल्चर और फॉस्फोरस घुलनशील सूक्ष्मजीव से उपचार करने के बाद बुवाई में देरी न करें।
- तुरन्त बुवाई करने से फफूँदनाशक बीज के अन्दर फफूँद को मारने में सफल नहीं हो पाता है।
- देरी करने से सूक्ष्मजीव निष्क्रिय होनें लगते है।
- धूप में सुखाने से सूक्ष्मजीव मरने लगते है।

बुवाई का समय

- पहली वर्षा के साथ 15 जून से 15 जुलाई के बीच बुवाई करें।
- यदि सिचाई के साधन उपलब्ध है तो जून के पहले सप्ताह में बुवाई करें।
- यदि वर्षा समय से पहले हो तो फैलने वाली किस्में लें अन्यथा गुच्छे वाली किस्में ही लें।
- गोबर की सड़ी हुई खाद 30 दिन पहले भूमि में अच्छी तरह मिलाकर डालें।
- उर्वरक बुवाई से पहले उर्वरक ड्रील द्वारा 8-10 सेमी गहराई में डालें।
- अधिक पैदावार के लिए चिकनी मिट्टी में चौड़ी क्यारी एवं नाली, मेड एवं नाली या आड़ी-तिरछी विधि से बुवाई करें।
- बीज को 5 सेमी से गहरा न बोयें।
- फैलने व अधिक अवधि वाली किस्मों को 15 जुलाई के बाद न बोयें।
- खाद एवं उर्वरकों का उपयोग बीज के साथ न करें।
- बीज अधिक गहराई में डालने से अंकुरण एवं पौध की बढवार प्रभावित होती है।
- बीज अधिक गहराई में होने से सिंचित जमीन में बीज के सड़ने की संभावनाएँ बढ़ जाती हैं।
- अधिक अवधि वाली किस्मों की बुवाई देरी से करने पर नमी के अभाव में पैदावार एवं गुणवत्ता में कमी आती हैं।

बीज दर एवं दूरी

- बीज की बुवाई पंक्तियों में हल या सीड ड्रिल से करें।
- बीज की मात्रा अंकुरण क्षमता एवं पंक्तियों के बीच की दूरी के अनुसार 100-120 किग्रा/हैक्टेयर रखें जिससे वांछित पौधों की सख्या प्राप्त कर सकें।
- फैलने वाली किस्मों में पंक्ति-पंक्ति की दूरी 45 सेमी एवं गुच्छा वाली किस्मों में 30 सेमी रखें और पौधे-पौधे की दूरी 10 सेमी रखें।
- जमीन के प्रकार एवं उर्वरकता, सिंचाई की उपलब्धता तथा अंत:-सस्य क्रियाओं के अनुसार पंक्ति-पंक्ति की दूरी में परिवर्तन किया जा सकता हैं।
- बुवाई सीड ड्रिल से ही करें।
- उथली बुवाई न करें।
- छिडकाव विधि से न करें।
- संस्तुतित बीज दर से कम या ज्यादा का प्रयोग न करें।
- उथली बुवाई करने से नमी के अभाव में अंकुरण ठीक नहीं होने के साथ पक्षियों द्वारा भी नुकसान होता है।
- बीज का अंकुरण एवं अंत: सस्य क्रियाएं प्रभावित होती है।
- संस्तुतित बीज दर और पंक्तियों में बोने से वांछित पौध संख्या मिलती है।

खेत की उर्वरा शक्ति बढ़ाना

- अधिक समय तक जमीन की उर्वरा शक्ति बनाये रखने के लिए जीवांश खाद जैसे गोबर, कम्पोष्ट, मुर्गी की खाद या हरी खाद बुवाई से 15-30 दिन पहले खेत में अच्छी तरह मिला लें।
- दो-तीन वर्ष के अन्तराल पर सनई, बरसीम अथवा दैंचा की फसल उगाकर फूल आने से पहले मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में मिला दें।
- फसल चक्र अपनाएं।
- खाद हल की कुण्डों में डाल कर पाटा चला दें जिससे जीवांश खाद मिट्टी में मिल जाये। खाद बिखरा रहने देने से आवश्यक पोषक तत्व सूर्य की किरणों से नष्ट हो जाते हैं।
- हरी खाद अच्छी तरह दबाना न भूलें।
- फसलों के ठूठ एवं डंठल नहीं जलाएं।
- प्रत्येक वर्ष एक ही खेत में मूँगफली नहीं उगाये।
- बिना या अधूरी सड़ी हुई गोबर की खाद खेत में न डालें।
- हरी खाद अच्छी तरह नहीं दबाने से खाद नहीं सड़ेगी और दीमक का प्रकोप बढने की संभावना बढ़ जाती है।
- जलाने से लाभदायक सूक्ष्मजीवों एवं जीवांश कार्बन नष्ट हो जाता है।
- दीमक का प्रकोप ज्यादा हो जाता है।

खाद एवं उर्वरको का संतुलित उपयोग

- नत्रजन की अधिक जरूरत नहीं होती क्योंकि यह वायुमंडल की नत्रजन को जड़ ग्रंथियों में संश्लेषित कर लेती है।
- अन्य मुख्य एवं सूक्ष्म तत्वों का उपयोग मृदा में कमी के आधार पर करें।
- जिप्सम का उपयोग करें।
- फसल का समन्वित पोषण प्रबंधन करें।
- उर्वरको की निर्धारित मात्रा ही डालें।
- सम्भवतया, अमोनियम सल्फेट एवं सिंगल सुपर फास्फेट का ही प्रयोग करें लेकिन अनुपलब्धता की स्थिति में यूरिया, डीएपी और एनपीके का उपयोग निर्धारित मात्रा में कर सकते हैं।
- यदि जिंक की कमी हो तो जिंक सल्फेट 20 किग्रा/है की दर से डालें।
- यदि लौह तत्व की कमी है तो फैरस सल्फेट (0.5 ग्राम/ली) और सिट्रिक अम्ल (0.02 ग्राम/ली) आवश्यकतानुसार फसल में छिडकाव करें।
- जैव उर्वरकों का उपयोग अधिकतम करें इनके प्रयोग से उर्वरको की कार्य क्षमता बढ़ती हैं ।
- नत्रजन की अधिक मात्रा न दें।
- उर्वरकों का प्रयोग छिडकाव विधि से न करें।
- उर्वरकों का उपयोग बीज के साथ मिलाकर न करें।
- मृदा जाँच बिना करवाएं उर्वरक न दें।
- नत्रजन की आवश्यकता कम होती है तथा फॉस्फोरस , पोटाश एवं कैल्सियम कुण्ड में ही डालें।
- छिडकाव विधि से खाद/उर्वरकों का वितरण असमान होता हैं एवं जमीन में भली-भांति मिल नहीं पाता है।
- उर्वरक बीज के साथ मिलाकर डालने से अंकुरण प्रभावित होता हैं।
- मृदा जाँच बिना करवाएं उर्वरक देनें से फसल का पोषण असंतुलित हो जाता है, उत्पादन मूल्य बढ़ सकता है।

खरपतवार प्रबंधन

- समन्वित खरपतवार प्रबंधन करें।
- 45-60 दिनों तक फसल खरपतवार विहीन होनी चाहिए।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग करें।
- फसल चक्र, अंतरा:-सस्यन एवं पलवार पद्धति अपनाएं।
- गुच्छे वाली किस्मों में 20 एवं 40 दिन और फैलने वाली में 20-40-55 दिन पर अंत: सस्य क्रियाएं करें और पंक्तियों में से घास निकालें।
- पेंडीमीथेलिन (1.0-2.0किग्रा/है), और ऑक्सीफ्लूरफेन (0.25-0.50 किग्रा/है) का बुवाई के 24 घंटे के अन्दर छिडकाव करें।
- क्वेजेलोफोप-ईथाल (5 0 ग्राम/है) और ईमेजाथाईपर (5 0 ग्राम/है) का बुवाई के 15-30 दिनों बाद तक छिडकाव करें।
- हवा की विपरीत दिशा व तेज गति होने पर खरपतवारनाशी का छिडकाव न करें।
- सूखी मृदा या नमी कम नहीं होनी चाहिए।
- पुराना (एक्सपायरी डेट वाला) खरपतवारनाशी उपयोग में न लें।
- विपरीत दिशा और तेज हवा में एक समान वितरण नहीं हो पाता हैं।
- खरपतवारनाशी नमी के आभाव में प्रभावशाली नहीं होता एवं निर्धारित अवधि के बाद डालने से खरपतवारनाशी खरपतवार नष्ट नहीं करने के साथ फसल को नुकसान भी कर सकता है।

अंतरा: सस्यन प्रणाली

- अरहर, अरंडी, तिल, सूरजमुखी, बाजरा, ज्वार और सोयाबीन के साथ अंतरा: सस्यन खेती करें।
- सिंचित मृदा में कपास के साथ अंतरा: सस्यन खेती करें।
- इससे मृदा उर्वरकता में सुधार, उपज में स्थिरता, जोखिम में कमी, नाशीजीव एवं रोगों में कमी एवं उच्च प्रतिफल प्राप्त होता है।
- मूँगफली+अरहर:आन्ध्रप्रदेश, महाराष्ट्र, उत्तर प्रदेश (6:1), गुजरात (3:1), कर्नाटक (4:1), मध्यप्रदेश (8:2)
- मूँगफली+अरंडी: आन्ध्रप्रदेश (5:1), गुजरात (3:1), तमिलनाडू (7:1)
- मूँगफली+सूरजमुखी: गुजरात (1:1), कर्नाटक (4:2), उत्तर-पूर्वी राज्य (3:1)
- मूँगफली+बाजरा: गुजरात (1:1), आन्ध्रप्रदेश, हरियाणा (3:1) राजस्थान, तमिलनाडू , उत्तर प्रदेश (4:1)
- मूँगफली+कपास: गुजरात (1:1), कर्नाटक (3:1), तमिलनाडू (5:1)
- मूँगफली+तिल: गुजरात (1:1), राजस्थान, मध्यप्रदेश, बिहार, उत्तरप्रदेश (4:1) तमिलनाडू (6:1)
- मूँगफली+ज्वार: कर्नाटक (6:1), महाराष्ट्र (4:1)
- मूँगफली+सोयाबीन: मध्यप्रदेश (4:1या 6:1)
- अरंडी को मूँगफली के साथ नहीं बोयें।
- अंतरा: फसल की उर्वरक मात्रा देने में चूक न करें।
- खरपतवारनाशी का प्रयोग साथ में उगने वाली फसल को ध्यान में रखकर करें।
- एक जैसी फसलों को इस प्रणाली में न लगायें जैसे तिलहन:तिलहन, दलहन:दलहन इत्यादि।
- अरंडी एक महीने के बाद बोयें अन्यथा मूँगफली का विकास रुक जायेगा।
- दोनों फसलों को उर्वरक दें अन्यथा पोषक तत्वों की कमी होगी।
- खरपतवारनाशी साथ में लगी फसल को मार सकता है।
- फसल विविधता के फायदे नहीं मिल पाते हैं।

जल संरक्षण एवं प्रबंधन

- वर्षा पर आधारित खेती में मई-सितम्बर के महीनों के बीच जल संग्रहण के आवश्यक उपाय करें एवं अनावृष्टि या कम वर्षा की स्थिति में संग्रहित जल का उपयोग सिंचाई में करें।
- अधिक वर्षा की स्थिति में उपयुक्त जल निकास की व्यवस्था करें।
- अप्रैल-मई महीनों में गहरी जुताई करें जिससे वर्षा का पानी संग्रहित हो सके।
- चौड़ी क्यारी एवं कुंड और मेड एवं कुंड पद्धतियों द्वारा नालियों से पानी का निकास कर संग्रहित करके लगभग 50% पानी बचाया जा सकता है।
- सिंचित भूमि में फव्वारा या बूंद-बूंद सिंचाई पद्धति से आवश्यकता पड़ने पर जीवन संजीवनी सिंचाई करें।
- अनावृष्टि की स्थिति में मृदा सतह को ढककर जमीन से होने वाले जल उत्पलावन को रोका जा सकता है।
- 60 दिनों के बाद अंत: सस्यन क्रियाएँ न करें।
- मेड़ो एवं नालियों पर खरपतवार न उगने दें।
- अधिक वर्षा होने पर खेत में पानी भरा न रहने दे।
- सिंचाई के समय पानी ज्यादा न दें।
- अधिक अंत: सस्यन क्रिया से सुईयों एवं फली बनने की प्रक्रिया में बाधा पड़ती है।
- खरपतवार के बीज खेत में चले जाते हैं।
- खड़ा पानी फसल को नुकसान पहुचाता है अत: जल निकास से पानी निकाल दें।
- ज़्यादा पानी देने से आवश्यक पोषक तत्व जड़ो के नीचे चले जाते हैं।

कीट नियंत्रण

- समन्वित कीट प्रबंधन करें।
- प्राकृतिक एवं जैविक रसायनों को प्राथमिकता दें।
- रस चूसने वाले कीड़े जैसे जैसिड/लीफहॉपर, एफिड/ चेपा, थ्रिप्स एवं चूर्णी मत्कुण का नियंत्रण करें।
- पत्ती भक्षक कीट जैसे तम्बाकू ईल्ली/स्पोडोप्टेरा, चना-फली भेदक/हैलीकोवर्पा, मूँगफली पूर्ण सुरंगक एवं लाल बालो वाली ईल्ली का नियंत्रण करें।
- मृदा और भण्डारण कीट जैसे सफेद लट/गिडार, दीमक एवं ब्रुचीड भृंग का नियंत्रण करें।
- मृदा सौरीकरण, गहरी जुताई, बीजोपचार, फसल चक्र, अंतरा: सस्य अपनाएं।
- ईमीडाकलोप्रीड 17.8 एस एल या थायोकलोप्रीड 480 एस सी (0.3 मिली/ली) या एसीटामीप्रीड 20 एस पी और थायोमेथोक्साम 25 डब्लू जी (0.2 मिली/ली) या मोनोक्रोटोफास 36 एस एल (2.5 मिली/ली) का स्प्रे 25-30 दिनों के बीच करें।
- क्लोरोपायरीफॉस 20 ई सी (2.5 मिली/ली), फ्लूबेंडामाइड 480 एस सी (0.2 मिली/ली)
- प्रोफेनोफॉस 50 ई सी (2.0 मिली/ली), क्यूनालफॉस 25 ई सी (2.0 मिली/ली)
- मूँगफली के बोरों पर डेल्टामेथ्रिन 2.5 एस सी (0.5 मिली/ली) या मेलाथियान 50 ई सी (5.0 मिली/ली) या स्पायनोसैड 45 एस सी (0.3 मिली/ली) का पानी में घोलकर छिड़काव करें।
- नत्रजन उर्वरकों का अत्यधिक प्रयोग न करें।
- यदि चूसने वाले कीड़ो का प्रकोप ज्यादा हो तो मूँग का अंतरा:सस्यन न करें।
- अधिक मारक क्षमता वाले कीटनाशकों का प्रयोग न करें।
- तेज धूप एवं हवा की विपरीत दिशा में दवा का छिडकाव न करें।
- कीटनाशी को बच्चों की पहुँच से दूर रखें।
- फसल ज्यादा हरीभरी होने के कारण कीटो को आकर्षित करते हैं।
- चूसक कीड़ो के वाहक मूँग की पत्तियों पर विकास करते हैं।
- फसल को नुकसान पहुचा सकते हैं।
- नाक एवं मुहँ के अन्दर दवा जा सकती हैं। यदि स्प्रे करने वाले व्यक्ति को कुछ होता है तो तुरन्त डाक्टर से सम्पर्क करें।
- बच्चे दवा पी सकते हैं।

पादप रोग नियंत्रण

- समन्वित पादप रोग प्रबंधन करें।
- मृदा जनित रोग जैसे कालर विगलन, अफ्ला जड़, तना विगलन, सूखा जड़ विगलन की रोकथाम करें।
- पर्णीय रोग जैसे अगेती और पछेती टिक्का रोग, गेरुआ, अल्टरनेरिया पत्ती अंगमारी की रोकथाम करें।
- विषाणु रोग जैसे मूँगफली कलिका ऊतकक्षय रोकथाम करें।
- अफ्लाटोक्सिन का फैलाव रोकना।

- फसल चक्र में कपास, गेहूँ, मक्का, ज्वार, प्याज तथा लहसुन को शामिल करें या मोठ के साथ मिश्रित फसल करें।
- मृदा में बुवाई के 15 दिन पहले अरंडी या नीम की खल को 500 किग्रा/है डालने से ग्रीवा एवं तना विगलन का संक्रमण कम हो जाता हैं।
- कार्बेन्डाजिम (1-1.5 ग्राम/ली)+मेंकोजेब (2-2.5 ग्राम/ली) का 2-3 सप्ताह के अन्तराल पर दो-तीन बार छिडकाव करें।
- 250 किलो गोबर खाद को 4 किलो ट्राइकोडर्मा हरजियानम या ट्राइकोडर्मा विरिडी की दर से उपचारित करके मिट्टी में मिलायें।
- बाजरा या मक्का को अंतरा: सस्य के रूप में लगाने से थ्रिप्स द्वारा मूँगफली कलिका ऊतकक्षय रोग का परिगमन कम हो सकता है।

- कालर विगलन रोग को कम करने के लिए गहरी बुवाई से बचें।
- बीज के छिलके को क्षतिग्रस्त करने से बचें एवं गहरी बुवाई न करे।
- मूँगफली एक ही खेत में प्रत्येक वर्ष नहीं लगायें।
- संवेदनशील किस्में नहीं लगायें।
- व्याधि नाशक दवाओं का प्रयोग बार-बार नहीं करें।

- मृदा का सौरीकरण (सोलेराईजेशन) करे।
- टिक्का तथा रोली रोग की संक्रामकता कम करने के लिए मूँगफली की अंतरा: सस्य, बाजरा या ज्वार या मक्का या अरहर के साथ करें।
- इससे व्याधि एवं कीट फैलते हैं, अत: फसल चक्र अपनाएं। फसल चक्र में कपास, गेहू, मक्का, ज्वार, प्याज तथा लहसुन को शामिल करना चाहिए।
- व्याधि प्रकोप बढ़ने के साथ वातावरण प्रदूषित होता हैं अत: समन्वित कीट-व्याधि नियंत्रण प्रक्रिया अपनाएं।

कटाई

- जब 75-80% फलियाँ पक गई हो तब कटाई करें और अगेती किस्मों को पहले काट लें।
- पत्ती पीली पड़ना, पुरानी पत्तियां नीचे गिरने लगें एवं बीज खोल की अत: सतह हल्की भूरी पड़ने पर कटाई करें।

- कटाई बैल या ट्रैक्टर चालित ब्लेड से करें।
- भारी भूमि यदि सूखी हो तो 7-8 दिन पहले सिंचाई कर दें।
- कटाई के दौरान फलियाँ जमीन में नहीं रहें।

- कम पकी फसल नहीं काटें।
- यदि भूमि सूखी हो तो कटाई न करें।
- सिंचाई के तुरन्त बाद कटाई नहीं करें।
- यंत्र से कटाई करने पर फलियों को नुकसान से बचाएं।

- गुणवत्ता में कमी होने पर भंडारण कीट हानि पहुचा सकते हैं।
- सूखी जमीन में कटाई करने से फलियाँ टूट सकती हैं।
- सिंचाई के तुरन्त बाद कटाई करने से मिट्टी फलियों से चिपकी रह सकती है।
- अफ्लाटोक्सिन का प्रकोप बढ़ सकता है।

मड़ाई, विनाई, सुखाई एवं भंडारण

- छाया में ही सुखाएं ।
- सूखी फलियाँ हाथ या यंत्र से ही निकालें।
- सूखी फलियाँ पॉलीथीन लाइन्ड गन्नी बैग या जूट की बोरिया में रखें।

- उखाड़े गए पौधों को छोटे- छोटे ढ़ेरों में उल्टा करके सुखाना चाहिए।
- विंड-रो विधि से सुखाएं।
- जूट की बोरियो को उपचारित जरुर कर लें।

- तेज धूप में नहीं सुखाएं।
- यदि फलियों में नमी 8% से अधिक है तो भंडारण न करें।
- धुम्रीकरण करना न भूलें।

- तेज धूप में सुखाने से बीज की जीवन क्षमता घट जाती है।
- नमी अधिक होने से भंडारण कीटो का प्रकोप बढ़ता है।
- धुम्रीकरण से भंडारण कीट प्रकोप नहीं करते है।

उन्नत किस्मे : विभिन्न राज्यों में अनुशंसित मूँगफली की किस्मे

राज्य	मूँगफली की किस्मे
आंध्र प्रदेश	कादरी-5, कादरी-6, कादरी-7, कादरी-8, कादरी-9, कलाहस्ती, नारायणी, प्रसुना, अभया, ग्रीष्मा, विजेथा, आई.सी.जी.वी.-00350, प्रताप राज मूंगफली
गुजरात	जी.जी-6, जी.जी-7, जी.जी-16, जी.जी-20, टी.जी-26, जी.जे.जी-22, परूथा, जे.एल-501, टी.जी-37ए, जी.जे.जी-31, जी.जे.जी-17
महाराष्ट्र	टी.के.जी.-19ए, टी.ए.जी-24, टी.एल.जी-45, फुले अनाप, रतनेश्वर, ए.के.-265, ए.के-303
तमिलनाडु	टी.एम.वी.-13, वी.आर.आई-6, वी.आर.आई-7, ए.के.-265, अजेया, आई.सी.जी.वी.-00348, आई.सी.जी.वी.-00350, विजेथा, जी.जी-16, सी.ओ-6
कर्नाटक	वी.आर.आई-6,वी.आर.आई-7, ए.के-265, अजेय, आई.सी.जी.वी-00348,आई.सी.जी.वी-91114, जी.जी-16, टी.जी.एल.वी.एस-3, विकास, कादिरी हरितन्धरा
राजस्थान	एच.एन.जी-10, एच.एन.जी-69, एच.एन.जी-123, जी.जी-20, टी.ए.जी-37 ए., ए.टी.ए-24, गिरनार-2, पी.एम-1, पी.एम-2, प्रतापराज मूँगफली, दुर्गा, उत्कर्ष, राज मूँगफली-1
हरियाणा	आई.सी.जी.एस-1, एम.एच-4, प्रकाश, एच.एन.जी-10, मुक्ता
पंजाब	एस.जी-99, एम-548, टी.जी-37 ए, जी.जी-21, गिरनार-2, एच.एन.जी-10, एच.एन.जी-69
मध्य प्रदेश	जे.जी.एन.-3, जे.जी.एन.-23, ए.के.-159, जी.जी.-8
ओडीशा	स्मृति, आए.सी.जी.वी.-91114, टी.जी-51, विजेथा, गिरनार-3, टी.जी-37 ए,टी.जी-38 बी
पश्चिम बंगाल	टी.जी-51,विजेथा, गिरनार-3, टी.जी-37 ए,टी.जी-38 बी, वसुंधरा
उत्तर प्रदेश	टी.जी-37 ए, जी.जी-21, गिरनार-2,एच.एन.जी.-10, 69,123, उत्कर्ष, दिव्या
उत्तर-पूर्वी क्षेत्र	टी.जी.-51, विजेथा, गिरनार-3, टी.जी-38 बी, वसुंधरा, जी.पी.बी.डी.-५
झारखंड	जी.पी.बी.डी-5, टी.जी-51, वसुंधरा, विकास

तालिका: विभिन्न प्रदेशो में मूँगफली हेतु उर्वरकों की अनुसंशित मात्रा (किग्रा/है)

राज्य		नत्रजन	फास्फोरस	पोटाश
आंध्रप्रदेश	बारानी	20	40	20
	सिंचित	30	60	45
गुजरात	बारानी	12.5-25	25-60	0-30
	सिंचित	25-37.5	50-70	0-30
कर्नाटक	बारानी	15	30	25
	सिंचित	25	75	25
मध्य प्रदेश	बारानी	20	40	20
पंजाब	सिंचित	15	40	25
राजस्थान	बारानी	20	60	0
	सिंचित	20	60	0
महाराष्ट्र	सिंचित	20	40	0
उत्तर प्रदेश	बारानी	15	30	45
पश्चिम बंगाल	सिंचित	15	30	45
तमिलनाडु	बारानी	11	22	33
	सिंचित	22	44	66

Published by :
ICAR-Directorate of Groundnut Research
P. B. No. 5, Junagadh - 362 001.
website: www.nrcg.res.in, e-mail: director@nrcg.res.in,
Tele/fax: +91 0285-2672550, Phone: +91 0285-2673041, 2672461

Printed by : **MooN Graphics**, 8, City Point, Talav Gate, Junagadh. Ph. : 0285-2650625